विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग -सप्तम् , विषय- हिंदी

दिनांक -30 अगस्त 2020

Based on NCERT pattern

।।अध्ययन -सामग्री ।।

।। मेरी मां ।।

कल की कक्षा में आपने जाना कि राम प्रसाद 'बिस्मिल' अपनी हर विशेषता का सारा श्रेय अपनी मां को देते हैं ।अब आगे ....

धार्मिक जीवन में भी तुम्हारे ही प्रोत्साहन ने सहायता दी ।जो कुछ शिक्षा मैंने ग्रहण की,

उसका भी श्रेय उन्हीं को है । मनोहर रूप से तो तुम मुझे उपदेश दिया करती थी उसका स्मरण कर तुम्हारी स्वर्गीय मूर्ति का ध्यान आ जाता है और मस्तक नत हो जाता है । तुम्हें यदि मुझे ताड़ना भी देनी हुए तो तुमने प्रेम भरे शब्दों में यही कहा कि तुम्हें जो अच्छा लगे वह करो ,किंतु ऐसा करना ठीक नहीं होगा । इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा । जीवन दात्री ! आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम मेरी सदैव सहायक रही । जन्म- जन्मांतर परमात्मा मुझे ऐसी ही माता दें । यही इच्छा है ।

अर्थ -विस्तार – बिस्मिल का कहना है कि मेरे धार्मिक जीवन की उन्नति का भी सारा

श्रेय मैं अपनी मां को दे रहा हूं । उनके नहीं रहने के बावजूद भी जब भी कभी उनके उपदेशों की जरूरत मुझे होती हैं, मैं उनकी मूर्ति का ध्यान करता हूं उनकी दी गई बातों पर गौर करता हूं और अपने जीवन में उन पर अमल करता हूं । बिस्मिल के अनुसार उनकी मां ने उन्हें कभी कठोर शब्दों के साथ नहीं समझ आया बल्कि कहा करती थी जो करना है करो ,लेकिन इसका परिणाम सही नहीं होगा । और इस बात की गंभीरता को बिस्मिल समझ जाते थे और उस कार्य को नहीं करते थे।

आज के लिए बस इतना ही, शेष कल.....

गृह -कार्य - गलती करने पर भी बिस्मिल की मां उन्हें कैसे समझाती थीं ? पठित पाठ के आधार पर लिखें ।